Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

रस

LIVE 03:00 PM

रस

कविता, कहानी,उपन्यास, नाटक आदि साहित्य कि विविध विधाओं को पढ़ने, देखने और सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती हैं, उसे रस कहते हैं।

अनेक रसाचार्यों ने अपनी अनुभूतियों के आधार पर रस की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ की हैं।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि ने प्रथमतः रस का उल्लेख अपने नाट्यशास्त्र में किया था।

उनके अनुसार-

"विभावानु भावव्यभिचारि सं योगाद्र सनिष्पति:"

(नाट्यशास्त्र,अध्याय 6)

इसका अर्थ यह हुआ-विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

रस के प्रकार

नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरत ने 8 रस माने हैं, तो आचार्य मम्मट और विश्वनाथ ने रसों की संख्या 9 मानी है। आगे चलकर वात्सल्य और भक्ति रस की भी कल्पना की गयी। इस प्रकार 11 रसों की कल्पना हुई।

भेद- रस के मुख्यतः 11 प्रकार होते हैं :

1. श्रृंगार रस
2. हास्य-रस
3. करुण रस
4. रौद्र-रस
5. वीर रस
6. भयानक रस
7. बीभत्स रस
8. अद्‌भुत रस
9. शान्त रस
10. भक्ति रस
11. वातसल्य रस

किसी विशेष स्थिति में प्रभावित मन की असाधारण दशा भाव कहलाती है , भाव ही रस का आधार है ।

भाव चार प्रकार के होते हैं-

1. स्थायी भाव

2. विभाव

3. अनुभाव

4. संचारी भाव

1.स्थायीभाव-

रस के मनःसंवेग,स्थायी भाव, और रस प्रकार -

मनःसंवेग	स्थायीभाव	रस प्रकार
1. काम	रति	श्रृंगार रस
2. हास	हास	हास्य रस
3. दुःख	शोक	करुण रस
4. क्रोध	क्रोध	रौद्र रस
5. उत्साह	उत्साह	वीर रस
6. भय	भय	भयानक रस
7. घृणा	जुगुप्सा	बीभत्स रस
8. आश्चर्य	विस्मय	अद्‌भुत रस
9 .दैन्य	निर्वेद	शांत रस
10.वत्सलता	वत्सलता	वात्स्लय रस
11. भक्ति	अनुराग	भक्ति रस

2.विभाव-

रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है।
विभाव के तीन भेद हैं

(i)आलम्बन –

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है, उसे 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जैसे-नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

(ii)उद्दीपन –

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाते हैं।

जैसे—नायिका का रूप सौन्दर्य आदि। प्रत्येक रस के उद्दीपन विभाव अलग-अलग होते हैं।

(iii)आश्रय-

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

3.अनुभाव —

मनोगत भाव को व्यक्त करने वाली शारीरिक और मानसिक चेष्टाएँ अनुभाव हैं।

अनुभाव भावों के बाद उत्पन्न होते हैं, इसलिए इन्हें अनु + भाव (भावों का अनुसरण करने वाला) कहते हैं।

अनुभाव मुख्यतः दो प्रकार के हैं

(ii)कायिक अनुभाव–

कायिक अनुभाव शरीर की चेष्टाओं को कहते हैं।
जैसे—कटाक्षपात, हाथ से इशारे करना, निश्वास, उच्छ्वास आदि।
कायिक अनुभाव जान-बूझकर, प्रयासपूर्वक किए जाते हैं।

(ii) सात्त्विक अनुभाव-

जो शारीरिक चेष्टाएँ स्वाभाविक रूप से स्वत: उत्पन्न हो जाती हैं, उन्हें सात्त्विक भाव कहते हैं। ये गणना में 8 हैं

1. रोमांच 2. स्वरभंग 3. कंप 4. स्वेद
5. वैवर्ण्य (चेहरे का रंग उड़ जाना) 6. अश्रु
7. प्रलय (चेतनाशून्य होना) 8. स्तम्भ (शरीर की चेष्टा का रुक जाना)

4.संचारी भाव-

जो भाव मन में केवल अल्प काल तक संचरण करके चले जाते हैं, वे संचारी भाव कहलाते हैं। इन्हीं का दूसरा नाम व्याभिचारी भाव है।
ये स्थायी भाव को पुष्ट करके क्षण भर में गायब हो जाते हैं।

इनकी संख्या 33 है—

(1) निर्वेद, (2) आवेग,(3) दैन्य, (4) श्रम, (5)मद,
(6)जड़ता,(7) उग्रता,(8) मोह,(9)शंका,(10)चिन्ता,
(11)ग्लानि,(12)विषाद,(13)व्याधि,(14)आलस्य,

(15)अमर्ष,(16)हर्ष,(17)गर्व,(18)असूया,(19)धृति,
(20)मति,(21)चापल्य,(22)व्रीड़ा(लज्जा),
(23)अवहित्था(हर्ष, भय आदि भावों को छिपाना),

(24)निद्रा,(25)स्वप्न,(26)विवोध,(27)उन्माद,
(28)अपस्मार(मिरगी),(29)स्मृति,(30)औत्सुक्य,
(31)त्रास,(32)वितर्कऔर(33)मरण।

(1) श्रृंगार रस -

श्रृंगार रस में नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थित रति या प्रेम जब रस के अवस्था में पहुंच जाता है तो वह श्रृंगार रस कहलाता है।

इसके अंतर्गत वसंत ऋतु, सौंदर्य, प्रकृति, सुंदर वन, पक्षियों श्रृंगार रस के अंतर्गत नायिकालंकार ऋतु तथा प्रकृति का वर्णन भी किया जाता है।
श्रृंगार रस को **रसराज या रसपति** भी कहा जाता है।

(1)श्रृंगार रस के भेद -

श्रृंगार रस के दो भेद होते हैं संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार

(1) संयोग श्रृंगार -

जब नायक नायिका के परस्पर मिलन, स्पर्श, आलिंगन, वार्तालाप आदि का वर्णन होता है तब वहां पर संयोग श्रृंगार रस होता है।

पलकन्हि हु परिहरि निमेखे।।

अधिक सनेह देह भई भोरी।
सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माही।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाही
।।
राम को रूप निहारित जानकि कंकन के नग की
परछाही।
यातें सबै भूलि गई कर टेकि रही, पल टारत नाहीं।

तुलसीदास

स्पष्टीकरण:-

इस पद मे स्थाई भाव रति है,
राम-आलंबन, सीता-आश्रय,
नग में पड़ने वाला राम का प्रतिविम्व उद्दीपन,
उस प्रतिबिम्ब को देखना, हाथ टेकना अनुभाव, तथा हर्ष
एवं जड़ता संचारी भाव है।
अत: इस पद में संयोग श्रृंगार है।

(2)वियोग श्रृंगार रस-

जहां पर नायक-नायिका का परस्पर प्रबल प्रेम हो लेकिन मिलन न हो अर्थात नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो वहां पर वियोग रस होता है।
वियोग श्रृंगार रस का स्थायी भाव रति होता है

उदाहरण-

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग,को अवराधै ईस॥
इन्द्री सिथिल भईं सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकिरही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस।

2.हास्य रस

काव्य में किसी की विचित्र वेशभूषा, चेष्टा, कथन आदि हँसी उत्पन्न करने वाले कार्यों का वर्णन 'हास्य रस' कहलाता है।

नाना वाहन नाना वेषा ।
बिहसे शिव समाज निज देखा ।।
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू ।
बिन पद-कर कोऊ बहु-बाहु ।।

3.करुण रस-

करुण शब्द का प्रयोग सहानुभूति एवं दया मिश्रित दुःख के भाव को प्रकट करने के लिये किया जाता है, अतः जब स्थायी भाव शोक विभाव अनुभव एवं संचारी भाव के सहयोग से अभिव्यक्त होकर आस्वाद रूप धारण करता है तब इसकी परिणीति करुण रस कहलाती है। करुण रस का स्थायी भाव शोक है।

सोक बिकल सब रोवहिं रानि। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा॥

4.रौद्र रस

अपने अथवा अपने प्रिय की निन्दा, हानि अथवा विरोध से रौद्र रस की उत्पत्ति होती है।

श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे
सब शोक अपना भुलाकर, करतल युग मलने लगे।
- मैथिलीशरण गुप्त

1. रसात्मक वाक्यं काव्यम्' किसका कथन हैं -

(a)विश्वनाथ

(b) राजशेखर

(c) श्री हर्ष

(d) भास

2.हिन्दी काव्यशास्त्र में 'रस' के कितने अंग हैं –

(a)3

(b) 4

(c) 5

(d) 6

3. स्थायी भावों को सही संख्या है

(a) 7

(b) 8

(c) 10

(d) 9

4. संचारी भावों की संख्या है

(a) 33

(b) 34

(c) 35

(d) 36

5. किस रस को 'रसराज' कहा जाता है?

(a) श्रृंगार रस

(b) हास्य रस

(c) वीर रस

(d) शान्त रस

6. सर्वश्रेष्ठ रस किसे माना जाता है?

(a)रौद्र रस

(b) श्रृंगार रस

(c) करुण रस

(d) वीर रस

7. 'वीर रस' का स्थायी भाव कौन-सा है?

(a) क्रोध

(b) भय

(c) शोक

(d) उत्साह

8. 'भय' किस रस का स्थायी भाव है?

(a)भयानक

(b) अद्‌भुत

(c) रौद्र

(d) वीभत्स

9. 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायी भाव है?

(a) भयानक

(b) वीभत्स

(c) शान्त

(d) वीर

10.'अद्‌भुत रस' का स्थायी भाव है

(a) जुगुप्सा (b) निवेद (c) विस्मय (d) उत्साह

11. 'शान्त रस' का स्थायी भाव है
(a) उत्साह (b) क्रोध (c) वात्सल्य (d) निर्वेद

12. 'वत्सल रस' का स्थायी भाव है

(a) वात्सल्य(b) हास(d) विस्मय(c) उत्साह

धन्यवाद